Date of Publication
May 2022

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www. विद्यावार्ता .कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 8.14 FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. ISO 9001:2015 International Multilingual Research Journal

http://www.printingarea.blogspot.com

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
जि. नांदेड

MAH MUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | May 2022 Special Issue

आमुख

भक्तिकाल अथवा पूर्व मध्यकाल हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण काल है, जिसे सुविज्ञआलोचकों ने 'स्वर्णयुग' विशेषण से विभूषित किया है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अंतर्विरोधों से परिपूर्ण होते हुए भी इस काल में भक्ति की ऐसी धारा प्रवाहित हुयी कि विद्वानों ने एकमत हो कर इसका नामकरण भक्ति काल किया। इस युग को स्वर्ण काल के विशेषण से अभिहित करने का सबसे सशक्त कारण यही रहा है कि, इस काल में ही सर्वप्रथम सदियों से चली आई आ रही सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और नैतिक आदि प्रकार की दासता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए मानवतावादी, तार्किक और संवेदनशील संतों, समाज सुधारकों और क्रांतिकारी विचारकों का उदय हुआ. इसी युग में रामानंद और वल्लभाचार्य के निर्देशन में नामदेव, कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, रविदास, दादू दयाल, रहीम, रसखान, धन्ना, पीपा, सेना नाई, सदना कसाई जैसे संतों और कवियों ने मानवतावाद का परचम लहराते हुए, समाज को एकसूत्र में बांधकर आलोक की ओर उन्मुख करने का गुरुत्तर कार्य किया है। जिसके फलस्वरूप तत्कालीन समाज में राष्ट्रीय और सामाजिक जागृति का उद्भव और विकास हो सका। और मुट्ठी भर लोगों के हित में जो सामाजिक व्यवस्था बनाई गई थी, उसे ध्वस्त कर संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए एक नई व्यवस्था बनाने का क्रांतिकारी आंदोलन शुरू किया गया। इस युग के संतों ने जो विचार अभिव्यक्त किए हैं उन्हें पढ़ने के पश्चात हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि, भक्ति काल ही वह समय रहा है जहां से सर्वप्रथम सामाजिक और वैचारिक क्रांति का सूत्रपात भारत वर्ष में हुआ।

'भज' धातु में 'क्तिन' प्रत्यय के साथ निर्मित शब्द 'भक्ति' अत्यंत व्यापक एवं गहन अर्थ धारण करता है. शांडिल्य और नारद भक्ति सूत्र में 'भक्ति' को 'सा परानुरक्तिरीश्वरे' एवं 'सा त्वस्मिन परम प्रेम रूपा' कहकर पारिभाषित किया है। वस्तुतः भक्ति और प्रेम मनुष्य की सहजात भाव स्थितियां हैं जिनके आधार पर भक्ति दो रूपों में प्रस्फुटित हुई— निर्गुण और सगुण. निर्गुण का शाब्दिक अर्थ है— नि:गुण अर्थात जो लौकिक गुणों (सत्व, रज और तम) में सीमित नहीं है। हम यह भी कह सकते हैं कि, आराध्य का वह स्वरुप जो अनादि, अनन्त, असीम और अव्यक्त होते हुए भी सर्वव्यापक एवं सर्वनियन्ता है, स्वयं सृजन कर्ता है और कण—कण में समाया है. श्वेताश्वरोपनिषद में निर्गुण के विषय में कहा गया

''एकोदेवः सर्वभूतेषु गूढ़ सर्वव्यापी सर्वभूतान्तारात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेताव केवलो निर्गुणश्च।।''

अर्थात निर्गुण एक अद्वितीय देव है जो सर्वव्यापी है, सब प्राणियों में निवास करता है, सभी कर्मों का अधिष्ठाता है, साक्षी है और सबको चेतना प्रदान करता है।

सत्य तो यही है कि, वेदों—उपनिषदों में ब्रह्म को इसी रूप में वर्णित किया गया है. यहाँ ऋषि-- मुनि ज्ञान के आधार पर ईश्वर के 'नेति—नेति' स्वरूप को जानने और समझने का प्रयास करते रहे हैं। ज्ञान और भक्ति साधना के दो पृथक रूप माने गए हैं, जबकि ये दोनों परस्पर गहन रूप से सम्बद्ध हैं। व्यावहारिक तौर पर देखा जाये तो किसी तत्व अथवा व्यक्ति के विषय में हम यदि बाह्य और अन्तः दोनों दृष्टियों से जान या समझ लेते हैं, तो उसे ज्ञान कहा जाता है। इस प्रक्रिया के उपरांत हमारा ह्दय उसके प्रति अनुरक्त होने लगता है। हम निरंतर उसी का स्मरण करते हैं। उसे भजते हैं— उसे ही भक्ति कहते हैं।

सगुण भक्ति का अर्थ है— आराध्य के रूप— गुण, आकर की कल्पना अपने भावानुरूप कर उसे अपने बीच व्याप्त देखना। सगुण भक्ति में ब्रह्म के अवतार रूप की प्रतिष्ठा है और अवतारवाद पुराणों के साथ प्रचार में आया। इसी से विष्णु अथवा ब्रह्म के दो अवतार राम और कृष्ण के उपासक अलग—अलग के रूप में इसने

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
जि. नांदेड

लगे। राम और कृष्ण के उपासक उन्हें विष्णु का अवतार मानने की अपेक्षा परब्रह्म ही मानते हैं।

भक्तिकाल का साहित्य 'हरिअनंता, हरिकथा अनंता।' की उक्ति की सार्थकता को सिद्ध करता है। अस्तु, इसी तथ्य को लक्ष्य कर अद्यतन भक्तिकालीन साहित्य पर जो शोध कार्य हुए हैं उनके आलोक में संतों के विचारों का अनुशीलन करना संभव हो सके इसी उद्देश्य से प्रेरित हो कर प्रस्तुत 'हिन्दी के भक्तिकालीन साहित्य का पुनरवलोकन' पुस्तक प्रकाशन की योजना बनाई गई है। हमारे इस आयोजन को सफल बनाने के लिए जिन–जिन शोधकर्ताओं ने शोधलेख भेजें हैं, उनके हम आभारी हैं। इस पुस्तक को आकर्षक रूप में प्रकाशित करने वाले हमारे मार्गदर्शक डॉ. बापुराव घोलप, हर्षवर्धन पुब्लिकेशन, बीड (महाराष्ट्र) इन्हें हार्दिक साधुवाद।

संपादक मंडल

प्रो. डॉ. रवीन्द्र शिरसाट
सह. प्रा. डॉ. संगीता जगताप
सह. प्रा. डॉ. प्रवीण देशमुख
सह. प्रा. डॉ. संतोषकुमार गाजले

Principal
A V Education Society's
Degloor College Degloor

INDEX

01) भक्ति भक्ती आंदोलन की पृष्ठभुमि
डॉ. रविंद्रकुमार शिरसाट, अमरावती. ||10

02) धर्म और धार्मिकताके संदर्भ में राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के विचार
डॉ. एस. एन. जगताप, चिखलदरा. ||14

03) भक्तिकालिन साहित्य की परिस्थितियाँ और विशेषताएँ
डॉ. उज्वला अशोक राणे (गोवा) ||18

04) कृष्ण भक्तिकाव्य के विकास में अष्टछाप के कवियों का योगदान
डॉ. दिनेश प्रसाद साह, दरभंगा ||21

05) हिन्दी में राम भक्ति साहित्य का पुनरावलोकन एक अध्ययन
निघोंट अर्चना महादेवराय, अमरावती ||27

06) हिंदी के भक्तिकालीन साहित्य का पुरावलोकन.....
डॉ. काकासो बापूसो भोसले, रामानंदनगर (बुर्ली), जि. सांगली ||31

07) सूफी साहित्य: एक अध्ययन
डॉ. सुधीरकुमार गौतम, दमोह (म.प्र.) ||35

08) कृष्ण भक्ति और सूरदास
प्रा. मालती बंसराज यादव, अमरावती ||38

09) रामचरितमानस में नारी का श्रद्धेय स्वरुप
प्रा. रेखा ध. धुराटे, अमरावती ||41

10) गोस्वामी तुलसीदास जी के काव्य में समन्वयता
डॉ. सविता व्ही. रूक्के, वाशिम ||45

11) तुलसीदास जी का लोकनायकत्व
प्रा. डॉ नलिनी शशिकांत पशिने, दासगाँव, गोंदिया महाराष्ट्र ||48

12) सूफी संत बाबा फरीद के वाणी में बिंब विधान और प्रतीक योजना
प्रा. डॉ. चंदन विश्वकर्मा, अमरावती. ||51

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

13) विट्ठल भक्त संत नामदेव
प्रा. डॉ. रेविता बलभीम कावळे, बसमत, ता. बसमत जि. हिंगोली ||55

14) वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता
प्रा. संतोष येरावार, देगलूर ||58

15) कबीर के आलोचकों का अनुशीलन
डॉ. संतोषकुमार गुंडप्पा गाजले, यवतमाल ||62

16) पद्मावत में जायसी के आध्यात्मिक विचार
डॉ. सरलता रामप्रकाश वर्मा, राजपुतपुरा, अकोला ||66

17) भक्तिकालीन कवि संत कबीर की संवेदना
डॉ. मंगला भवर, नासिक. ||70

18) भक्तिभागीरथी के प्रवाहक संत नामदेव
डॉ. सुरेशकुमार केसवानी, अकोला ||73

19) मध्यकालीन संत साहित्य:एक अवलोकन
डॉ. जयश्री अ. बडगे, अमरावती ||77

20) राधावल्लभ सम्प्रदाय में धृवदास का स्थान
डॉ. निशाली पंचगाम, अकोला ||82

21) संत कबीर और संत रैदास की गुरु महिमा का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. मुकुंद कवड़े, नदिंड़ ||87

22) संत कबीर के काव्य में भाषा और भक्ति भावना
गंगा लिबांजीराव गायके, अंबाजोगाई ||90

23) संत कबीर के साहित्य में ''रहस्यवाद''
डॉ. सुनीता बुंदेले, अमरावती ||92

24) मध्यकालीन भक्त शिरोमणि 'संत सेना महाराज' के विचारों की प्रासंगिकता
प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ, पालम जि. परभणी ||97

25) समाज सुधार के रूप में कबीर
डॉ. प्रवीण देशमुख, बार्शीटाकली, अकोला ||101

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर जि. नांदेड

अंत में इनता सारा महत्वपूर्ण कार्य करने के बाद श्री क्षेत्र पंढ़रपुर मे श्री विठ्ठल मंदिर के प्रवेश के पास ही शनिवार, आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी, विक्रम संवत, शके १२७२ को अर्थात ०३ जुलाई १३५० को एकांत में समाधिस्त हुए थे। लगभग अस्सी वर्ष तक विठ्ठल—भक्ति और भक्ति—आन्दोलन का प्रचार—प्रसार करते रहे।

संक्षेप मे कहा जा सकता है कि अपने जीवन काल में भक्ति का प्रचार—प्रसार करते समय अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। भगवान दर्शन के लिए हमेशा व्याकुल रहे। विठ्ठलभक्ति में लीन होकर विठ्ठलजी को वे अपना सबकुछ मान बैठे। तन—मन—धन से उन्होंने ईश्वर सेवा की। अत: वे एक सच्चे भक्त थे। एक विठ्ठल भक्त संत थे। एक प्रभावशाली कवि भी थे। अनेक पद रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में सृजन किया है। कुछ विद्वानोंने नामदेवजी को निर्गुण संत तो कुछ ने सगुण संत कवि माना है। लेकिन उन्होंने सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार की उपासना की है। उन्होंने भगवान का व्यापकत्व कण—कण में देखा है। उनके काव्य की सरलता, सहजता और सुबोधता से मन प्रफुल्लित होता है। पृथ्वी के जल, थल आदि चारों ओर भगवान को पाया है। सत्संगति को महत्व दिया है। भगवान की सर्वव्यापकता को स्वीकारा है। भगवान ही सर्वाधिक सुंदर और सर्वप्रिय है। उन्होंने अपना समस्त जीवन भगवान के चरणों में समर्पित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- महाराष्ट्रीय ज्ञानकोश, पृ. १७६
- नामदेवांची अभंगवाणी — सम्पा. हेमंत इनामदार, पृ. ५३
- हिंदी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, डॉ. बडथ्वाल, पृ. ९६
- नामदेवांची अभंगवाणी — सम्पा. हेमंत इनामदार, पृ. ०६
- वही, पृ. १५३
- वही, पृ. १४३
- वही, पृ. १५५
- वही, पृ. १५७
- वही, पृ. १५९

14

वैश्वीकरण परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के सा त्य की प्रासंगिकता

संतोष येरावार
देग महाविद्यालय देगलूर

****

मुक्त अ वस्था, यांत्रीकरण, औद्योगिकरण, निजीकरण, पुंजी भौतिक सुख—साधनों की विपुलता, बाजारवाद, वैश्व ण, पाश्चात्य संस्कृती का मोहित एवं भ्रमित जाल आडंबर ने समाज को अत्याधिक प्रभावित किया एक और विकास की नई ऊंचाई को आत्मसात कि तो दुसरी ओर आधुनिक समाज पतन की गहरी की ओर तीव्रता से अग्रसर हो रहा है महानग में जहां रोजगार, शिक्षा, एवं सुखसुविधाओं की चकाचौंध ने मानव को बाह्य रूप से प्रभावित किया आंतरिक रूप से मानव विक्षिप्त, संकुचित एवं खो ा हो गया है। समानता, स्वतंत्र, एवं वंचित घटको ा विकास के प्रवाह में आने का अवसर मिला तो ी ओर अमानवीयता, चरित्रहिनता, वासना, एवं मूल्य नता पनपने लगी। बाजारवाद में मानव को बाजार ा दिया। महानगरोंने जनमानस का सुख—चौन छीन या है। अतृप्त वासना की अंधी दौड़ ने मनुष्य को ना बना दिया। महानगरों में लोगों को झोली पैसे सु —सुविधाओं से भर गई तो दूसरी ओर समाज मे क विकृतियों, विसंगतियों एवं विषमताओं ने ी जड़ मजबूत की। समाज अराजकता, मूल्य विघटन, उन्मुक्त असंतोष एवं समस्याओं का अ बन गया। मनुष्य आर्थिक दृष्टि से मजबूत हो गया और मानसिकदृष्टि से विक्षिप्त, विकृत, एवं आत्म रत हो गया। प्रेम, समर्पन, दया, एवं मानवता जैसे ल्य धराशाही हो गए। अनीति, अन्याय, अत्याचार ष्टाचार शोषण को मानव विकास के अंग समझ ा गया। राजनीतिक, सामाजिक,

सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक, साहित्यिक एवं आर्थिक परिवेश विकृत हो गए। स्त्री मुक्त का स्वर समाज में उभरने लगा स्त्री ने अपने क्षमता एवं अस्तित्व को तराशा और विकास की नई बुलंदी को आत्मसात किया। समाज के हर स्तंभ में स्री अपनी पहचान बनाने लगी। रोजगार, शिक्षा, सुख—सुविधाओं के अवसर महानगरों में स्त्री को प्राप्त हो गए। तो दूसरी ओर स्त्री—शोषण, बलात्कार, महानगरीय परिवेश ने मानव सभ्यता को एवं मानवीय मूल्यों को विकृत बना दिया है। मानवीय लालसा ने प्राकृतिक तत्वों का तीव्रता से दहन किया। मानवी उदात्तता एवं समर्पणशिलती धराशाही हो गई। पूंजीवादी व्यवस्था ने दलित, मजदूर, किसान, स्त्री एवं आदिवासियों के शोषण को बढ़ावा दिया। अमानवीय प्रगती के कारण मानव, समाज एवं प्रकृति का सौंदर्य उजड़ गया। कुंवारीमाताये, विवाहबाह्य संबंध, घटस्फोट, कार्यस्थल पर यौन—शोषण, एकतर्फा प्रेम से उपजी पीड़ा मुक्त—यौनाचार,अश्लीलता, नशाखोरी, उन्मुक्तता एवं स्वैराचार जैसी समस्याओ ने स्त्री—जीवन को आहत किया। मनोरंजन, चाकाचौंध, भौतिक सुख—साधनों की लालसा, एवं बाह्य आडंबर को बाजारवाद ने बढ़ावा दिया और उसी बाजारवाद ने स्त्री को भी अपने वश में जखड़ लिया।

राजनीति के विषाक्त माहौल ने समाज, धर्म, शिक्षा, परिवार और जनमानस की मानसिकता को भी विषाक्त और विकृत बना दिया है। आतंकवाद, धर्मांधता, सांप्रदायिकता, कट्टरवाद और पशुता सर्वत्र पनपने लगी जिस कारण संत कबीर के साहित्य में व्यक्त विचार वर्तमान समाज में मानवता, बंधुता, प्रेम, सेवा, दया, समर्पण की स्थापना करने में सक्षम है। संत कबीर के विचारों में पशुसम मानव में मानवता के बीज, बोने में और समाज उपयोगी मूल्यों को पुनः रोपित करने की क्षमता है।

संत कबीर एक समाज सुधारक और मानवधर्म के प्रवर्तक थे इसीकारण अपने वाणी के माध्यम से उन्होंने समाज को विविध कुरितियों, विकृतियों, विडंबनाओं एवं विषमताओं से अवगत कराया व आंडबरो, मिथ्याचारों, कुप्रथाओंसे, एवं विशाक्त मानसिकतासे लोगों को सचेत किया और उन्हे सहि दिशा दी इसलिए आज भी कबीर का साहित्य प्रासंगिक है। हिन्दी साहित्य में कबीर का महत्व आज भी उतना ही है जितना भक्तिकाल में था। बल्कि कहना तो यह होगा कि उस काल से भी अधिक महत्व आज है। आज भी हमारी सामाजिक स्थितियाँ उन्ही विचित्रताओं और विशमताओं से घिरी हुई है जैसे पहले थी। भक्तिकाल में मनुष्य के पास भक्ति का आश्रय था, ईश्वर के प्रति आस्था थी। जिसमें वह अपने व्दन्द, तनाव और संत्रास को उसके विश्वास का भागी बनाकर कम कर देता था। आज वह अधिक तनावग्रस्त, अशांत और संकुचित दायरे में सिमटा हुआ है।

धर्म के नाम पर वर्तमान परिवेशमें भी अवाम को भ्रमित किया जा रहा है। धर्म के वास्तविक रुप को उघाडने का कर्य कबीरदस ने किया है अपने स्वार्थ की पुर्तता के लिए धर्म के ठेकेदार आडंबर, मूर्तिपूजा, कर्मकांड, रोजा, नमाज, यज्ञ आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है और लागों को लुटा जा रहा है।

धार्मिक प्रथाओंके एवं पतित, जिर्ण—पुरातन परंपरा के नामपर अशांतता, जातियता एवं धर्मांधता को बढ़ावा दिया जा रहा है। संत कबीर यैसी भ्रमित, अविवेकी प्रथाओं पर प्रहार करते है।

''मुंड मुडाए हरि मिले, तो हर कोई लेई मुंडाया,
बार बार के मुंडते, भेड ना बैकुंठ जाय।
''कांकर पात्थर जोरि के मस्जिद लयि बनाये
ता चढ मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।

कबीर कहते है यदि मुंडन करने से ईश्वर की प्राती होती तो बार—बार भेडो को मुंडाया जाता है तो क्या वह बैकुंठ जाती है। धर्म के तथाकथित ठेकेदार धर्म के नाम पर अपने स्वार्थ की रोटी सेखते है। मुंडन, पुजा—अर्चा, अभिषेक, यज्ञ, चादर चढाना आदि बाह्य आडम्बरों को एवं निरर्थक कर्मकांड को बढावा देते है और लोगो को ठगते है। कर्मकांड से आरोग्य, धन, वैभव, एवं यश की प्राप्ती होती तो सदैव पुजा—अर्चा करनेवाले, नमाज पढवानेवाले दुनियाँ के सबसे सफल व्यक्ती होते? कर्मकांड के कारण मनुष्य अकर्मण्य हो रहा है। ऐसे अकर्मण्य एवं निराश व्यक्ती को कर्मशील बनाने के लिए उसे विवेकशील बनाने के लिए कबीर का साहित्य महत्वपूर्ण है।

धर्म के नाम पर आतंकवाद को, हिंसा को, धर्मांधता को बढावा दिया जा रहा है। भोले—भाले युवकों को भ्रमित किया जा रहा है। वास्तव में कोई भी धर्म हिंसा, बुराई और हैवानियत नही सिखाता है। परंतु कुछ धर्मांध ठेकेदार धर्म के नामपर हिंसा फैला रहे है। आय.एस. आय.एस., अलकायदा, बोको हराम, तालिबान, हिजबुल मुजाहिद्दीन, अल बदर आदि आतंकवादी संघटन धर्म के नाम पर, जिहाद के नाम पर एवं जन्नत के नाम पर युवकों को आतंकवादी बना रहे है। हजारों बेकसूर लोगों को मारा जा रहा है। आवाम को डराया और धमकाया जा रहा है। जिहादी बनने वाले युवक लोगों को मार कर जन्नत जाने की कामना कर रहे है। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, शिरिया, लिबीया, इराण, इराक, सोमालिया एवं टुनेशिया आदि राष्ट्र आतंकवाद के नाम पर जल रहे है। धर्म के नाम पर सांप्रदायिकता को बढावा दिया जा रहा है। कट्टरता, क्रुरता, अमानवियता फैलाने में धर्मांध ठेकेदार सफल भी हो रहे है। दुनिया भर के मुस्लीम युवक आय.एस.आय.एस. आतंकवादी संघटन में शामील होने के लिए शिरिया जा रहे है। यह धर्मांध लोगो की सफलता का प्रमाण है। भारत में भी पाकिस्तान आतंकवाद को धर्म के नाम पर बढावा दे रहा है। कश्मीर के युवकों को पत्थरबाजी करने के लिए भी धर्म को सहारा लिया जा रहा है। जिहादीयों कहाँ जा रहा है धर्म के लिए लोगों को मारने से जन्नत की प्राप्ती होती है। ऐसे भ्रमित भटके हुवे युवाओं के लिए कबीर के वास्तववादी एवं मानवतावादी विचार मिल का पत्थर साबित हो सकते है। कबीर के विचार आज भी प्रासंगिक बन पडत है। कबीर ने धर्म का और मानवता का जो यथार्थ रूप अभिव्यक्त किया है वह धर्मांध युवाओं के लिए आवश्यक है।

''मौको कहाँ ढूंढे रे, बंदे मै तो तेरे पास में,
ना मैं देवल, ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।
''ना तो कौनो किया, कर्म में, नहीं योग बैराग में,
खोजी होय तो तरते मिलिहो, पलभर की तलाश में।

धर्म, संप्रदाय, जाति मनुष्य को जन्म से नही प्राप्त होते और नही उसके प्राप्ति में मनुष्य का कोई योगदान होता है। जन्म के बाद मनुष्य को जाति एवं धर्म के नामपर बाटा जाता है। मूल रूप में सभी मानव मात्र है।

'जेटू बामन बामनि का जाया आन बाट है व क्यों नही आया जे तू तुरक तुरकनि जाया तो भीतरि खतना क्यों न कराया।।''

कबीर के समय में भी धर्म, एवं संप्रदायो के नाम पर दंगे फसाद हिंसा और अमानवीय कृतियाँ होती रहती थी धर्म की श्रेष्ठता ने मनुष्य को हिंसक बना दिया था। इसलिए कबीर कहते है कि ना इश्वर मंदिर में रहता है और ना ही मस्जिद में और ना मै कैलास में ईश्वर तो जीवमात्र में हि बसा हुआ है। मानव के भीतर के ईश्वर को पहचानो मानव के साथ मानवता पुर्ण व्यवहार करों ईश्वर की प्राप्ती हो जायेगी अल्लाह या ईश्वर के नाम पर हिंसा या आतंक धर्म नही हैं वे आगे कहते है ईश्वर तो घट—घट में व्याप्त है।

''कस्तुरी कुंडली बसै मृग हुँडे बन माही,
ऐसे घट—घट राम है दुनिया देखी नाही''

संत कबीर के युग में विभिन्न संप्रदायों के आपसी मतभेदो से भी अधिक बडी समस्या हिन्दू और मुसलमान के आपसी मतभेदो की थी। उस समय इन दोनों के संबंध बहुत अर्थों मे आज जैसे थे द्य लेकिन दोनों के संबंधो में एक बहूत बडा फर्क भी था, उस युग में मुसलमान शासक थे, आज वे शासक नहीं हैं लेकिन इस फर्क के बावजूद दोनों के संबंध पहले की तरह आज भी मतभेद और तनाव के हैं द्य संत कबीर दोनों के विषय में जो बात कहते हैं, वह उनके युग की तरह आज भी सच है —

'हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुर्क कहै रहिमाना
आपस में दोउ लरि—लरि मुए, मर्म न काहु जाना

राम और रहीम का यह झगडा दोनों संप्रदायों को आज तक एक—दुसरे से अलग—अलग करता रहा है। दोनों भी यह समझने के लिए तैयार नही है कि, राम और रहिम एक ही ईश्वर के अलग—अलग नाम है।

आज धर्म, ईश्वर, अल्लाह एवं धर्मग्रंथ के नाम पर हिंसा को बढावा दिया जा रहा है। धार्मिक स्थलों के कारण विषमता फैलायी जा रही है। भोले—भाले युवकों को भ्रमित किया जा रहा है।

आये दिन दंगल हो रही है। ऐसे विषम परिस्थिती में लोगों को वास्तविक ईश्वर का और वास्तविक धर्म का परिचय होना आवश्यक है। कबीर में धर्म की वास्तविकता को उघाडकर लोगों की आँखे खोलने का प्रयास किया है। कबीर के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है।

प्रेम के उदात्त, व्यापक एवं वास्तविक रूप को कबीर ने अभिव्यक्त किया है। वर्तमान में प्रेम के नामपर प्रपंच किया जा रहा है। प्रेम में प्रेम को छोडकर सबकुछ किया जा रहा है। प्रेम मे जंहा समर्पण, स्नेह, वात्सल्य, दया को प्रधानता दि जाती थी आज प्रेम के नाम पर वासना एवं षडयंत्र को महत्व दिया जा रहा है। प्रेम में पाने का भाव महत्वपुर्ण हो गया है। प्रेम शरीर सुख का पर्याय बन गया है। प्रेम के नाम पर हत्या, धोखा, अॅसिड फेकना जैसी घटनायें आम हो गई है। प्रेम भी जाँती, वर्ग, वर्ण, संप्रदायस एवं धर्म में बट रहा है। जातिविषयक प्रतिष्ठा के कारण प्रेम को कलंकित किया जा रहा है। आज युवकों को प्रेम के वास्तविक एवं उदात्त रूप को समझाना आवश्यक है। कबीर के विचारों में वह सामर्थ्य है जो समाज को सहि राह दिखा सकते है। कबीर के प्रेम संबंधी विचार आज भी प्रासंगिक है।

'यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नहिं।
शीष उतारे भुयं धरे, तब पैठ घर मांहि।।

प्रेम हि मानव जीवन का सार है। प्रेम के बिना संसार अधुरा है। प्रेम किसी वर्ग विशेष की जागिर नहि है। प्रेम किसी विशेष जाति, धर्म, वर्ण, संप्रदाय के बन्धन में नहीं है और न ही इसे किसी हाट–बाट, शहर–बाजार से खरीदा जा सकता है। प्रेम ही वह साधन है जिससे अज्ञान–तिमिर नष्ट होकर ज्ञान का प्रकाश फैलता है। प्रेम हि मानव को ईन्सान बनाता हैं प्रेम हि मानव को संवेदनशील एवं समर्पणशील बनाता है।

वर्तमान समय में जीवन के हर स्तर पर भ्रम, विकृतियों एवं विसंगतियों ने मनुष्य को जखड रखा है। मनुष्य अत्यंत द्विधा और असमंजस्य की अवस्था में जी रहा है। भौतिक सुख साधन तो मानव ने विपुल मात्रा में अर्जित कर लिए। अर्थसंपन्नता से भी मनुष्य सज्ज है परंतु वह अशांत, अकेला, अजनबी और निराश है। आत्म शांति के लिए मानव बेचैन है परन्तु ऊसे संतुष्ठि की प्राप्ती नहि हो रही है। भौतिक साधनो को पाने की होड नें मनुष्य को विक्षिप्त एवं अंधा बना दिया है। बाजार के चकाचौंध ने मनुष्य को बौना बना दिया है। सच्चाई, अच्छाई, नितिमत्ता कौडीयों के दाम में बेची जा रही है। झुट, फरेब, धोखा, वासना, अहिंसा से ग्रस्त व्यक्ती संवेदनशुन्य बनता जा रहा है। अनावश्यक और आडम्बर पुर्ण विचार एवं वस्तु की महत्ता बढ रही है। सबकुछ होकर भी वह आंतरिक रूप से डरासहमासा है। बेचौनी की अवस्था में जीवनयापन कर रहा है। अर्थकेंद्रित, वासनांध एवं मुल्यहिन मानसिकताने मनुष्य को चरित्रहिन एवं विश्वासहिन बना दिया है। युगीन परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के वास्तववादी, मानवतावादी एवं समाज उपयोगी विचार अत्यंत प्रासंगिक है। संत कबीर के मानवतावादी विचार आज के वैश्वीकरण से उपजी समस्याओं, विकृतियों और स्वार्थ पूर्णता में अत्यंत सहायक और प्रासंगिक है। वर्तमान में समाज को सही दिशा और उपयोगी मूल्यों की नितांत आवश्यकता है। संपूर्ण दुनिया, कोरोना और युद्धजन्य परिस्थिति का सामना कर रही है यैसे में संत कबीर के मानवतावादी, विचार की संपूर्ण विश्व को विकास और शांति के राह पर चलने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

१) कबीर निराला और मुक्तिबोध – श्रीमती ललिता अरोडा
२) हिन्दी साहित्य – युग और प्रवृत्तियाँ – डॉ. शिवकुमार शर्मा
३) युग पुरूष कबीर – डॉ. रामलाल वर्मा, डॉ. रामचंद्र वर्मा
४) कबीर वचनावली – अयोध्यासिंह उपाध्याय – हरिऔध
५) कबीर की प्रासंगिकता – सं. सुनील जोगी
६) संत कबीर और तुकाराम के काव्य में प्रासंगिकता – डॉ. ज्ञानेश्वर गाडे

Principal
A V Education Society's
Degloor College Degloor